2. प्रायद्वीपीय पठार :-

प्रायद्वीपीय पठार या दक्कन का पठार उत्तर भारत के मैदान के दक्षिण में फैला है। इसका आकार त्रिभुजाकार है। इस पठार के उत्तर में अरावली, विंध्याचल व सतपुड़ा की पहाड़ियाँ, प॰ में ऊँचे पश्चिमी घाट व पूर्व में निम्न पूर्वी घाट तथा द॰ में नीलगिरि पर्वत स्थित है। इसकी औसत ऊँचाई 450 - 750 m. है। ~~अफ्रीका से भारत के अलग होने के कारण भारत के पश्चिमी तट का निर्माण हुआ~~ है। प॰ घाट वास्तव में पर्वत नहीं लेकिन एक भ्रंश कगार है जो अफ्रीका से भारत के अलग होने के कारण बना। यह भारत का सबसे बड़ा पठार है जिसका क्षेत्रफल लगभग 16 लाख वर्ग km. है। यह प्राचीनतम कठोर चट्टानों का बना भू भाग है। जिसका क्षरण अपक्षय एवं अपरदन के कारण निरन्तर होता रहा है। इस पठार का ढाल प॰ से पू॰ की ओर है। यह पठार कभी भी समुद्र के नीचे नहीं डूबा है।

नर्मदा नदी की घाटी संपूर्ण प्रायद्वीपीय पठार को 2 असमान भागों में बाँटती है। उत्तर के भाग को मालवा का पठार व दक्षिण के भाग को दक्कन या दक्षिण का मुख्य पठार कहते हैं।

(1) मालवा का पठार →

यह पठार जगह-जगह पर नदियों के प्रवाह के कारण टूट गया है। इसके पूर्वी भाग को बघेलखंड एवं पश्चिमी भाग बुंदेलखंड के नाम से जाना जाता है। इस पठार की ढाल गंगा घाटी की ओर है। यहाँ की मुख्य पर्वत श्रेणी विंध्याचल है। मालवा पठार के पूर्वी भाग में महादेव, मैकाल, बराकर व राजमहल की पहाड़ियाँ हैं। विंध्याचल के द॰ में उसी के समानान्तर सतपुड़ा श्रेणी है। यहाँ की औसत ऊँचाई 762 m. है लेकिन अमरकंटक की ऊँचाई 1066 m. है। सतपुड़ा की सबसे ऊँची चोटी पंचमढ़ी 1350 m. है जो स्वास्थ्यवर्द्धक पर्यटन स्थल है।

छोटानागपुर का पठार के अन्तर्गत झारखंड व उड़ीसा क्षेत्र के ~~क्षेत्र~~ कुछ क्षेत्र आते हैं। इस पठार की औसत ऊँचाई 760 m. है। इसकी सर्वोच्च चोटी पारसनाथ 1365 m. ऊँची है। इस पठार

PAGE NO.
DATE / /

Scanned with CamScanner

(i) लावा का पठार → यह ताप्ती नदी के दक्षिण में त्रिभुजाकार रूप में फैला है। इसका निर्माण प्राचीनकाल में लम्बे अंश से ज्वालामुखी उद्गार से निकले लावा के जमने से हुआ है। अतः इसे लावा पठार या दक्कन पठार कहते हैं। यहाँ की लावा की मिट्टी विशेष उपजाऊ है।

(ii) मैसूर या कर्नाटक का पठार → यह 2 भागों में बँटा है:- (a) उत्तरी भाग जहाँ कृष्णा व तुंगभद्रा नदियाँ बहती हैं। (b) दक्षिणी भाग इसे मैसूर पठार भी कहते हैं। बाबा-बूदन की पहाड़ियाँ यहीं स्थित हैं जो लौह अयस्क के लिए प्रसिद्ध हैं। प्राचीन चट्टानों से निर्मित यह पठार खनिजों का धनी है। इसके नदी घाटियों में गोंडवाना युग के कोयले पाए जाते हैं। भारत का 98% कोयला दक्षिण पठार के मध्य व उत्तर पूर्वी भाग से प्राप्त होता है।

(iii) छत्तीसगढ़ निम्नभूमि एवं गढ़जात पहाड़ियाँ → यह विषम रचना वाला भूभाग छोटानागपुर पठार के दक्षिण व द० पूर्व में तथा मैकाल ~~पर्वत~~ के पूर्व में स्थित है। यहाँ का अधिकांश भाग 300 से 500m. के मध्य ऊँचा है। इसका प० भाग तेजी से ऊपर उठने के कारण रिमलैंड के नाम से प्रसिद्ध है। छत्तीसगढ़ के पूर्व में उड़ीसा में गढ़जात की पहाड़ियाँ हैं। यहाँ का सबसे ऊँचा भाग मलयगिरि 1185 m. ऊँचा है।

(iv) दण्डकारण्य पठारी प्रदेश अत्यंत ऊबड़ खाबड़ व गोंडवाना पहाड़ियों एवं बिखरे पठारों की भूमि है। इस प्रदेश की पूर्वी व द० पूर्वी सीमा पूर्वी घाट तक विस्तृत है। बैलाडिला की पहाड़ियाँ 1250m. ऊँची हैं। जहाँ लौह अयस्क की खानें विस्तृत हैं।

(v) पश्चिमी घाट → इन्हें सह्याद्री की पहाड़ियाँ भी कहते हैं। यह महाराष्ट्र से कन्याकुमारी तक 1600 Km. लम्बी है। ये अरब सागर की ओर तीव्र ढाल तथा पूर्व की ओर धीमा ढाल वाला है। इनकी औसत ऊँचाई 1066 से 1220 m. है। पश्चिमी घाट में 3 प्रमुख दर्रे हैं थालघाट, भोरघाट व पालघाट हैं। दक्षिण में नीलगिरि की पहाड़ियों के द्वारा यह

Scanned with CamScanner

PAGE NO.:
DATE: / /

पूर्वी घाट से मिल जाते हैं। नीलगिरि की सबसे ऊँची चोटी दोदाबेटा (2670 m.) है। नीलगिरि के द० में अन्नामलाई की पहाड़ियाँ हैं जिसकी सर्वोच्च चोटी अनाइमुडी (2695 m) है। अन्नामलाई की एक शाखा पालनी हिल व दूसरी शाखा इलायची की पहाड़ियाँ है। पालनी हिल में ही कोडाईकनाल स्थित है।

(ii) पूर्वी घाट → यह पर्वत उत्तर में अधिक चौड़ा व दक्षिण में कम चौड़ा है। इसके अन्तर्गत उड़ीसा व उत्तरी सरकार के पूर्वी घाट, नल्लामलाय, पालकोंडा, जावड़ी, शिवराय इत्यादि पहाड़ियाँ हैं। इसकी सबसे ऊँची चोटी विशाखापटनम चोटी (1680 m.) है। महेन्द्रगिरि दूसरी सबसे ऊँची चोटी (1501 m.) है। पूर्वी घाट को काटकर महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, पेन्नार आदि नदियाँ अपने उपजाऊ मैदान व डेल्टा बनाती है। इसकी औसत ऊँचाई 760 - 1510 m. है। पूर्वी घाट का उत्तरी भाग 75000 वर्ग Km. में फैला है जबकि दक्षिणी भाग बहुत ही कटा फटा व कम ऊँचा है। इसी भाग में नल्लामलय श्रेणी है। इसके द० में पालकोंडा श्रेणी है। इसी के प० में शेषाचलम श्रेणी है। कावेरी के द० में बिलीगिरिरंगन श्रेणी है जिसका सर्वोच्च भाग कोडाईकनाल पहाड़ी 1355 m. ऊँचा है। कावेरी व पेन्नार नदी के बीच मलयगिरि नल्लामाला व वेलीकोंडा श्रेणियाँ हैं।

इसी भाग में नीलगिरि के पूर्व में शिवराय, कोलाईमलाई, पचामलाई, गोडुमलाई व जवादी श्रेणियाँ हैं। जहाँ पश्चिमी घाट व पूर्वी घाट मिलते हैं वह भाग 1650 - 1920 m. ऊँचा उठा हुआ है।